दिनांक 10 जनवरी, 2016 को निखिल भारतीय बंग साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में माननीया राज्यपाल जी का अभिभाषण

आज निखिल भारत बंगो साहित्य सम्मेलनेर द्वारा आयोजित एई कार्यक्रमे सम्मिलित होए आमि अत्यन्तो प्रसन्नो होएछि। सर्बप्रोथमे एई कार्यक्रोमे परम सम्मानीय माननीय राष्ट्रपति महाशयेर गरिमामयी उपस्थितिते आमि अभिनन्दन जानाच्छि एवं बिरसा मुण्डा सहो आरो शेहिददेर एई माटिते ओनार स्वागत जनाछि। ओनार एई कार्यक्रमे उपस्थिति शुधुमात्रो एई समितिर साथे जूक्तो थाका मानुषदेरई खुशीर विषय नय बरं एटि समग्र राज्योबासीर काछे ओत्योन्तो गर्वेर विषय। सम्मानीय राष्ट्रपति महाशयेर स्वच्छ एवं प्रेरणादायक राजनीतिक जीबन सर्बबिदित आछे।

एकजोन लोकप्रियो विद्वान जननेतार रूपे प्रोतिष्ठितो एवं सम्मानित आमादेर राष्ट्रपति महाशय व्यवहारे कुशल मृदुभाषी स्वभाव एबं विशेष प्रशासनिक अनुभबेर जोनो प्रोत्येकेर काछेइ यथेष्ठो प्रियो होए आछेन। देशेर कोल्यानेर जोन्नो ऐतिहासिक निर्णय ओनार भूमिका आमरा देखेछि।

I 'A PERSON DEVOID OF LITERATURE, MUSIC AND ARTS IS DEFINITELY AN ANIMAL WITHOUT TAIL & HORNS.'

कहा गया है– साहित्य समाज का दर्पण होता है जो समाज का विभिन्न कालखंड में उसकी अवस्था व दशा का दर्शाता है। किसी लेखक की रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन समाज की दशा के अतिरिक्त संस्कृति, रीति–रिवाज़, धर्म, वातावरण आदि विभिन्न पहलूओं के सन्दर्भ में बेहतर तरीके से परिकल्पना कर सकते हैं। कुल मिलकार, साहित्य और समाज एक–दूसरे पर आश्रित है। जिस समाज की जैसी परिस्थितियाँ होंगी, वैसा ही उनका साहित्य होगा। जहाँ तक बांग्ला साहित्य की बात है, यह अत्यन्त ही समृद्ध है।

12वीं शताब्दी के अन्त में एक कवि ने अपनी प्रचलित गीत के माध्यम से कहा है कि – लोग जैसे गंगा में स्नान कर पवित्र हो जाते हैं, वैसे ही वे बंग्ला वाणी में स्नान कर पवित्र हो सकते हैं। इस कथन के पीछे थी अपनी माटी की सुगंध तथा अपनी वाणी एवं भाषा के प्रति समर्पित रहना। मध्यकालीन बंग साहित्यकार श्री कृतिवास ओझा ने महर्षि बाल्मिकी की रचना रामायण को बंगला में प्रस्तुत किया एवं उसे आम लोगों तक पहुँचाने की दिशा में बड़ा प्रयास किया। कवि चण्डिदास रचित गीत एवं स्वामी चैतन्य महाप्रभु द्वारा रचित कृष्ण भक्ति गीत ने आम लोगों की भावनाओं को

साहित्यिक एवं काव्यमय आयाम दिया। जानकारी के मुताबिक, 15वीं शताब्दी में बंगाल के शासक हुसैनशाह ने अपने पुत्र नसिरूद्दीन नसरत से महाभारत का अनुवाद बंगला मे करवाया। यह रचना बाद में कविंद्र द्वारा ''पांडवविजय'' नाम से प्रस्तुत किया गया। मैथिली कवि विद्यापति का भी बंग साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इसके अतिरिक्त अरबी एवं फारसी साहित्य का भी अनुशीलन बंगला साहित्य में किया गया जिससे यह और समृद्ध होता गया।

आधुनिक बंग साहित्य विविधता, एकता, स्पष्टता, प्रखरता, काल एवं कर्त्तव्यबोध की जीती जागती मिशाल है। श्री बकिंमचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित आनन्द मठ एवं इसके कालजयी गीत वन्देमातरम् न केवल बंगाल में अपितु पूरे भारत में जन-जागरण का श्लोक बन गया। इस गीत ने स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में भाग लेने के लिए सबको प्रेरित करने का कार्य किया। आनन्दमठ नवयुवकों के लिए गीता बन गया था और इस कालजयी कृति ने ऐसी मानसिकता तैयार कर दी जिसने बंगाल के साथ-साथ समूचे भारतवर्ष में अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध आन्दोलन का सूत्रपात किया, नवयुवकों में देशभक्ति की भावना भरी एवं उन्हें आज़ादी की

राह पर निरंतर चलने वाला धीर-वीर सपूत बनने की प्रेरणा दी।

बांग्ला साहित्यकारों ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ अपनी रचनाओं के माध्यम से छुआ-छूत, बाल विवाह, सति-प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने की दिशा में जनमानस को जागरूक करने का कार्य किया। बंग साहित्य ने जीवन के हर पहलू को जीवंत किया। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं समसामयिक मुद्दे साहित्य के अध्याय बने। साहित्य ने सोच की दशा को सुधारी एवं वैसी स्थिति का निर्माण किया जिसमें इसकी दिशा तय की। स्वामी विवेकानन्द, रविन्द्र नाथ ठाकुर, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, श्री शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय ने विश्व पटल पर अमिट छाप छोड़ी। बंगाल से उठी लौ ने उप महाद्वीप की अन्य भाषाओं को भी अभिप्रेरित किया। कला, संस्कृति, संगीत के प्रचार-प्रसार में यह भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर रहा है।

निखिल भारतीय बंग साहित्य सम्मेलन संस्था का गठन साहित्य के विकास की दृष्टिकोण से अहम है। इस संस्था से गुरूदेव रविन्द्र नाथ ठाकुर जैसे महापुरूष जुड़े हुए थे। खुशी की बात है कि हमारे परम आदरणीय राष्ट्रपति महोदय भी

इस संस्था के सभापति रह चुके हैं। निश्चितरूपेण उन्होंने अपनी दक्षता से संस्था को नई दिशा देने का कार्य किया है।

मैं एक बार पुनः परम आादरणीय राष्ट्रपति महोदय का इस कार्यक्रम में आने हेतु आभार प्रकट करती हूँ तथा आशा है कि राष्ट्रपति महोदय का आशीर्वचन संस्था को नई दिशा देने का कार्य करेगा।

जय हिन्द!